

Chapter-15

श्रमविभाजन और जातिप्रथा

Exercise 15.1

1 Mark Questions

1. प्रश्न: श्रमविभाजन का क्या अर्थ है?

उत्तर: श्रमविभाजन एक समाज में काम के अनुसार लोगों को विभाजित करने की प्रक्रिया है, जिससे विभिन्न वर्गों में लोगों के बीच भेदभाव होता है।

2. प्रश्न: श्रमविभाजन कैसे समाज में हो सकता है?

उत्तर: श्रमविभाजन कास्तचित या व्यापक रूप से हो सकता है, जैसे कि व्यापारिक, आर्थिक, और व्यावसायिक क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों के बीच भी।

3. प्रश्न: जातिप्रथा क्या है?

उत्तर: जातिप्रथा एक समाज में लोगों को उनकी जाति के आधार पर विभाजित करने और उन्हें विशिष्ट सामाजिक वर्गों में स्थानित करने की प्रथा है।

4. प्रश्न: जातिप्रथा कैसे समाज में प्रभावित करती है?

उत्तर: जातिप्रथा समाज में भेदभाव, असमानता, और आत्मसमर्पण बढ़ा सकती है, जिससे सामाजिक न्याय और समानता में कमी होती है।

5. प्रश्न: जातिप्रथा की उत्पत्ति क्या हो सकती है?

उत्तर: जातिप्रथा की उत्पत्ति ऐतिहासिक, सामाजिक, और आर्थिक कारणों से हो सकती है, जो समाज में विभाजन और विशेषता बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

6. प्रश्न: जातिप्रथा का क्या प्रभाव हो सकता है समाज के विकास पर?

उत्तर: जातिप्रथा समाज के विकास में रुकावट डाल सकती है, क्योंकि इससे अधिकांश लोगों को समान अवसर नहीं मिलते हैं और समाज का समृद्धि का सामाजिक समृद्धि में भी विघ्न डाल सकता है।

7. प्रश्न: श्रमविभाजन और जातिप्रथा के बीच क्या संबंध हो सकता है?

उत्तर: श्रमविभाजन और जातिप्रथा दोनों ही समाज में विभाजन बढ़ा सकते हैं, क्योंकि व्यक्तियों को उनके व्यावसायिक क्षेत्र और जाति के आधार पर विभाजित किया जा सकता है।

8. प्रश्न: जातिप्रथा को कम करने के लिए समाज में कौनकौन से कदम उठाए जा सकते हैं?

उत्तर: जातिप्रथा को कम करने के लिए समाज में शिक्षा, समानता, और न्याय के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सामाजिक आंदोलन और सुधार के कदम उठाए जा सकते हैं।

9. प्रश्न: श्रमविभाजन को कम करने के लिए कौनकौन से उपाय किए जा सकते हैं?

उत्तर: श्रमविभाजन को कम करने के लिए समाज में शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, और योजनाएं शुरू की जा सकती हैं ताकि लोगों को समान अवसर मिले।

10. प्रश्न: जातिप्रथा और श्रमविभाजन के खिलाफ समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए कैसे सामाजिक मुहिमें शुरू की जा सकती हैं?

उत्तर: समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए सामाजिक मुहिमें जैसे कि सेमिनार, अभिवादन, अभियान, और समारोह आयोजित किए जा सकते हैं जिनमें लोगों को जातिप्रथा और श्रमविभाजन के खिलाफ जागरूक किया जा सकता है।

Exercise 15.2

2 Mark s Questions

1. श्रमविभाजन का कारण क्या हो सकता है?

उत्तर: श्रमविभाजन का कारण आर्थिक असमानता, शिक्षा के अभ्यास में भेदभाव, और रोजगार के क्षेत्र में संबंधित योजनाओं की कमी हो सकती है।

2. जातिप्रथा के कारण होने वाले सामाजिक असमानता को कैसे दृष्टिकोण से देखा जा सकता है?

उत्तर: जातिप्रथा से होने वाले सामाजिक असमानता को व्यक्ति के जाति के आधार पर उसके सामाजिक स्थान और सुविधाओं के परिधान में व्यक्त करता है।

3. श्रमविभाजन का समाज पर क्या प्रभाव हो सकता है?

उत्तर: श्रमविभाजन समाज में भेदभाव बढ़ा सकता है और समाज में सामाजिक असमानता और तनाव पैदा कर सकता है।

4. जातिप्रथा के प्रभाव के बारे में कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर: जातिप्रथा के प्रभाव में विवाह, उपाधि प्राप्ति, और समाज में स्थिति के आधार पर अलगअलग समूहों में भेदभाव शामिल हो सकता है।

5. श्रमविभाजन के क्षेत्रों को विस्तार से समझाइए।

उत्तर: श्रमविभाजन विभिन्न क्षेत्रों में हो सकता है, जैसे कि व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, और नौकरी क्षेत्रों में।

6. जातिप्रथा के खिलाफ उठाए जाने वाले आंदोलनों का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर: अम्बेडकरिटे आंदोलन भारत में जातिप्रथा के खिलाफ हुआ एक महत्वपूर्ण आंदोलन था, जिसमें भगवान बुद्ध के अनुयायी और भगवान अम्बेडकर शामिल थे।

7. श्रमविभाजन को कम करने के लिए सरकारी पहलुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: सरकारें श्रमविभाजन को कम करने के लिए रोजगार योजनाएं, शिक्षा कार्यक्रम, और व्यापारिक नियमों में सुधार करने के लिए कई पहलुओं को अपना रही हैं।

8. जातिप्रथा और शिक्षा के बीच का कैसा संबंध हो सकता है?

उत्तर: जातिप्रथा कई बार शिक्षा के अधिग्रहण में बाधक हो सकती है और व्यक्तियों को उच्च शिक्षा तक पहुँचने में रुकावटें उत्पन्न कर सकती हैं।

9. श्रमविभाजन के कारण विकसित और अविकसित क्षेत्रों में कैसा भेद हो सकता है?

उत्तर: श्रमविभाजन से विकसित और अविकसित क्षेत्रों में असमानता बढ़ सकती है, जिससे समृद्धि की घातक विभाजन हो सकती है।

10. जातिप्रथा के खिलाफ सामाजिक सुधार के लिए समाज कैसे सहयोग कर सकता है?

उत्तर: समाज जातिप्रथा के खिलाफ सामाजिक सुधार के लिए शिक्षा, जागरूकता, और अधिकार संरक्षण के लिए समूहों और संगठनों के साथ मिलकर काम कर सकता है।

Exercise 15.3

4 Marks Questions

प्रश्न 1. जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर: जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात् परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।

ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा न बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। हिंदू धर्म की जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। आज यह स्थिति नहीं है। सरकारी कानून, समाज सुधार व शिक्षा के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोर हुए हैं। पेशे संबंधी बंधन समाप्त प्रायः हैं। यदि व्यक्ति अपना पेशा बदलना चाहे तो जाति बाधक नहीं है।

प्रश्न 2. लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर: लेखक के मत से 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। दासता की व्यापक परिभाषा है- किसी व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ है- उसे दासता में जकड़कर रखना। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रश्न 3. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर: शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह इसलिए करते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। वे शारीरिक वंश परंपरा व सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार को अनुचित मानते हैं। उनका मानना है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है। तो उसे समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध करवाने चाहिए। राजनीतिज्ञों को भी सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। समान व्यवहार और स्वतंत्रता को सिद्धांत ही समता का प्रतिरूप है। सामाजिक उत्थान के लिए समता का होना अनिवार्य है।

प्रश्न 4.सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर:हम लेखक की बात से सहमत हैं। उन्होंने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। भावनात्मक समत्व तभी आ सकता है जब समान भौतिक स्थितियाँ व जीवन-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। समाज में जाति-प्रथा का उन्मूलन समता का भाव होने से ही हो सकता है। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। शहर में कान्वेंट स्कूल व सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के बीच स्पर्धा में कान्वेंट स्कूल का विद्यार्थी ही जीतेगा क्योंकि उसे अच्छी सुविधाएँ मिली हैं। अतः जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिलें तो उनका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

प्रश्न 5.आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेंगी?

उत्तर:लेखक ने अपने आदर्श समाज में भ्रातृता के अंतर्गत स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। भ्रातृता से अभिप्राय भाईचारे की भावना अथवा विश्व बंधुत्व की भावना से है। जब यह भावना किसी व्यक्ति विशेष या लिंग विशेष की है ही नहीं तो स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से इसमें सम्मिलित हो जाती हैं। आखिर स्त्री का स्त्री के प्रति प्रेम भी तो बंधुत्व की भावना को ही प्रकट करता है। इसलिए मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि यह शब्द पूर्णता का द्योतक है।

Exercise 15.4

Summary

श्रम-विभाजन एक समाज में लोगों के काम या श्रम के आधार पर उन्हें विभाजित करने की प्रक्रिया है। यह आर्थिक रूप से, शिक्षा में, और रोजगार के क्षेत्र में हो सकता है। श्रम-विभाजन समाज में भेदभाव और असमानता बढ़ा सकता है, जिससे विकास में रुकावटें आ सकती हैं। सरकारें रोजगार योजनाएं, शिक्षा कार्यक्रम, और व्यापारिक नियमों में सुधार करके इस असमानता को कम करने का प्रयास कर रही हैं।

जाति-प्रथा समाज में लोगों को उनकी जाति के आधार पर विभाजित करने और उन्हें विशिष्ट सामाजिक वर्गों में स्थानित करने की प्रथा है। इस प्रथा से उत्पन्न भेदभाव के कारण लोगों को समाज में सामाजिक समानता और न्याय का अधिकार नहीं मिलता है। जाति-प्रथा के खिलाफ समाज में जागरूकता बढ़ाने और सुधार के लिए अलग-अलग सामाजिक आंदोलन, अधिकार संरक्षण, और शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जाति-प्रथा को कम करने के लिए समाज में जागरूकता बढ़ाने की कई पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।